नुष्य बनो

३/75

वा० मू० ४-५०

णा गति

शुभ संकल्प,

मा,

प्रेम,

निष्काम कर्म,

ब्रह्मचर्य पालन,

क

याल फकीर चन्दजी महाराज

नवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सद सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और रण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जा

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जांय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अव लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिये। वी०पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ४-५० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यह डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले वह अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुँचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ़ल लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

देवीचरन मीतल

सम्पादक

R.S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदंः पूर्णात्पूर्णं मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ।।

❀ मनुष्य बनो ❀

वर्ष २३ | पौष सं० २०३० वि० फरवरी १९७४ | संख्या ५/२५४

मन अन्त काल जब आता है ।
धन सम्पति और मान बड़ाई, साथ नहीं कुछ जाता है ।।टेक।।
किसका कौन पुत्र हुआ उस दिन, कौन बन्धु हित भ्राता है ।
कुटुम्ब कबीला काम न आवे, झूठा जग का नाता है ।। मन०
बायें तिरिया आंसू बहावे, दायें सुत पितु माता है ।
चलते समय न संग हो कोई, हंस अकेला जाता है ।। ,,
वस्ती छोड़ मोड़ मुँह सबसे, ऊजड़ ग्राम बसाता है ।
कोई गाड़े कोई मांटी मिलावे, कोई आग जलाता है ।। ,,
वा दिन की कुछ सुध कर मन में, क्यों भूला भरमाता है ।
जो नहिं चेत करे गुरु संगत, रोता और पछताता है ।। ,,
काल करम की डगर कठिन है, यम उत्पात मचाता है ।
पंथ न सूझे रात अँधेरी, मारग कौन दिखाता हैं ।। ,,
इस जग में रहना दो दिन का, जो आया सो जाता है ।
राजा रंक भिकारी पंडित, काल सबन को खाता है ।। ,,
भज गुरुनाम लाग गुरु सेवा, गुरु संग काज बनाता है ।
राधास्वामी चरन शरण बलिहारी, सेवक गुरु गुन गाता है ।। ,,

मानसिक अवस्था

जब गहराई से विचार किया जाय तो ज्ञात होता है कि यह सारा पसारा मन ही का है। जब कोई कटु बचन कह देता है तो यह मन ही है जो दुखी होता है या क्रोधित होता है। जब कोई खुशी की बात होती है तो सुखी होता है। जब गुरु प्रेम या भगवत् प्रेम बढ़ जाता है तो मनुष्य उसी में लीन होने लगता है। मन का वेग ही है कि हम काम के वशीभूत होकर कामी हो जाते हैं और संतान उत्पन्न करते है। मन ही है जिससे हम में वैराग आ जाता है। मन ही से संसार में अनेकानेक वासनायें व कामनायें बढ़ती हैं। मन ही से घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, शत्रुता, प्रेम आदि गुण व अवगुण हम में आ जाते हैं। इसी प्रकार और भी समझ लेना चाहिये। इसीलिये हर एक धर्म में मन को वश में करने की शिक्षा दी गई है तथा मन के विचार शुभ, आशावादी, कल्याणकारी रखने का आदेश दिया गया है। वेदों में 'शिव संकल्पमस्तु' रखने का आदेश है। परम दयाल फकीरचन्द जी महाराज हमेशा मन के विचारों को शुद्ध तथा कल्याणकारी रखने पर जोर देते रहते हैं, क्योंकि जैसी आसा वैसी वासा, जैसी मति वैसी गति। यदि हमारे विचार निराशावादी है; घृणा, द्वेष, ईर्ष्या के हैं तो उसका परिणाम हमको भोगना पड़ता है। महाराज जी विशेष रूप से इस बात पर जोर देते हैं कि यदि मन गंदा है तो ऐसे व्यक्ति को साधन अभ्यास नहीं करना चाहिये वर्ना उसका परिणाम दुखदाई होगा। वह गंदे विचार साधन अभ्यास करने वाले के अधिक शक्तिशाली हो जायेंगे। इसीलिये महाराज हर एक व्यक्ति को नाम दीक्षा देना अनुचित समझते हैं जब तक कि सत्संग द्वारा उसका मन निर्मल न हो जाय।

अब दूसरा पहलु यह है कि मन के शुद्ध होने पर यदि किसी व्यक्ति क. मन नाम की प्राप्ति, आवागमन से बचने या संसार में उन्नति करने की ओर लग गया तो वह व्यक्ति मन को एकाग्र करके अपने ध्येय की प्राप्ति में सफल हो जाता है। जिनकी भगवान, सत्गुरु की प्राप्ति की इच्छा प्रबल हो जाती

है वह उधर भी शीघ्र सफल हो जाते हैं। जितने सन्त, महात्मा, साधु मक्त हुये हैं वह सब मन को निर्मल करके ही हुये हैं।

यहाँ इतना कह देना भी आवश्यक है कि हमारे तीन शरीरों का भोजन भी तीन प्रकार का है। स्थूल शरीर का भोजन अन्नादि है। मन का भोजन शुभ संकल्प है, तथा कारण शरीर का भोजन आनन्द है। इसलिये अपने जीवन को सुधारने, उन्नति करने, परमार्थ की कमाई करने के लिये इस मन की सार संभार करना परमाश्यक है। इस मन को काबू किये तथा वश में किये बिना लोक तथा परलोक दोनों में से किसी की प्राप्ति नहीं हो सकती है और न जीवन में सुख शान्ति प्राप्त हो सकती है।

मन इतना चंचल है कि क्षण क्षण में रंग बदलता रहता है। सन्त जन भी जब तक शरीर और मन है अर्थात् जब तक शरीर और मन का भान रहता है तब तक इससे भय मानते हैं। इसलिये इसकी निरख परख क्षण-क्षण रखने की आवश्यकता है!

मां बाप के संस्कार तथा अपने प्रालब्ध कर्मों का मन पर पूरा प्रभाव होता है। उनके कारण मनुष्य की ऐसी प्रवृति रहती है मगर महाराज जी का अनुभव है कि संगत का प्रभाव भी रग लाये बिना नहीं रहता। शराबी, जुआरी, चोर, डकैत आदि की संतान से उसके प्रभाव आये बिना नहीं रहते हैं। इसलिये शास्त्रों में तथा संत महात्माओं ने सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय, सत्पुरुषों, संत महात्माओं की संगत पर बड़ा जोर दिया है और दुर्जन की संगत से हर समय बचाव रखने का आदेश दिया है। संत महात्माओं की संगत का प्रभाव जाने अनजाने मनुष्य पर पड़ता रहता है और मनुष्य कुछ ही समय में सुधर जाता है। कहा है—

सठ सुधरहिं सत्संगत पाई।

इसलिये अपने मन को हर समय काम में लगाये रखना तथा शुभ-विचारों की ओर लगाये रखना परमाश्यक है। क्रमशः

—देवीचरन मीतल

महाराज जी का शिवरात्रि दौरा प्रोग्राम

तारीख	स्थान से प्रस्थान	पहुँच	समय
१७-२-७४	होशियारपुर		
१८-२-७४		वाराणसी	१७.३०
,,	वाराणसी से	शिव समाधि गोपीगज	कार से
२१-२-७४	गोपीगज से	खानपुर	कार से
२४-२-७४	खानपुर से	वाराणसी	कार से
२६-२-७४	वाराणसी से	मुगलसराय कानपुर	दहली एक्सप्रेस से
२७-२-७४	कानपुर में सुबह शाम २७ ए हार्डिंग रोड पर सत्संग		
२८-२-७४	कानपुर से	अलीगढ़	आसाम मेल
१-३-७४	दयालधाम (सोफानगरिया)		
२-३-७४	अलीगढ़ सायं (लेखराज नगर में सत्संग)		
३-३-७४	,, प्रातः	,,	
३-३-७४	अलीगढ़	बिलारी	—

'मनुष्य बनो' का चन्दा

अभी तक 'मनुष्य बनो' का चन्दा बहुत से ग्राहकों ने नहीं भेजा है। आजकल मंहगाई का जमाना है। इसका खर्चा पहिले से बहुत बढ़ गया है। इसीलिए कृपा करके ग्राहक जन तुरन्त इसका चन्दा भेज दें।

—०—

'मनुष्य बनो' न मिलने की शिकायत

कुछ ग्राहकों को यह शिकायत है कि 'मनुष्य बनो' नहीं मिलता है। हमारे यहाँ से हर महीने पूरी जांच पड़ताल करके हर एक ग्राहक को भेजा जाता है मगर डाक विभाग की गड़बड़ी के लिये हम क्या कर सकते हैं। हमारे पास इसका एक यही इलाज है कि जिनको 'मनुष्य बनो' न मिले वह हमको चिट्ठी लिख दें। हम उनको दुबारा भेज देते हैं। इसलिये अपने डाकखाने में भी लिखकर शिकायत जरूर किया करें फिर हमको चिट्ठी लिख दिया करें।

सत्संग प्रवचन

परमदयाल जी महाराज

(मानवता मन्दिर १६-१०-७२)

निज घट में खोज पिया को सखी, क्या भरमे जगत उजाड़ा री ।
सतगुरु से ले घट भेद सही, कर सतसंग उनका सारा री ।।
तन मन इन्द्री रोक चलो, घट सतगुरु चरनन पियारा री ।
धुन घट में सुन-सुन अधर चढ़ो, जहाँ बहती निर्मल धारा री ।।
कलि मल धोय होय सुत निर्मल, लखती जोति उजारा री ।
बंक पार धुन गगन सुनी, सुन्न में जाय निरख बेहारा री ।।
महासुन्न परे लख भंवरगुफा, सतपुरुष दरश निहारा री ।
अलख अगम के पार लखा, राधास्वामी धाम नियारा री ।।

आनन्द राव, कादरी बाबा और दूसरे सज्जनो ! आप लोग मेरी बीमारी की खबर सुनकर दहली से आये हो । मुझे गुरु बनने की लालसा नहीं और न मान आदर की आवश्यकता है, हाँ जीवन में पेट के लिये रोटी अवश्य चाहिये । मुझे बचपन से किसी वस्तु की खोज थी और अब भी है । कोई उसे राम कहता है, कोई उसे खुदा कहता है, कोई शान्ती कहता है और कोई उसे मुक्ति कहता है । कोई वस्तु है जिस तरह चुम्बक लोहे को खेंचता रहता है ऐसे ही मनुष्य अपनी खोज के लिये खिचा रहता है । खोज सबके अन्दर है मगर किसी को मालुम है और किसी को मालुम नहीं है । लोग मेरे पास आते हैं । क्या तुम किसी को कुछ दे सकते हो ? कुछ नहीं । मैं आप लोगों को अपने जीवन का अनुभव दे सकता हूँ कि मेरे साथ जीवन में क्या बीता और क्या बीत रहा है ।

आदमी अपने प्रीतम की ओर स्वाभाविक रूप से जाने या अनजाने खिचा रहता है । प्रीतम हर एक आदमी के अपने अन्तर में है । मैं अपने

आपसे पूछता हूँ कि जो प्रीतम तेरे अन्तर में है क्या तुमने उसे देखा है ? कोई समय था जब मैं अपने प्रीतम को राम के रूप में देखता था। आनन्द और सहारा लेता था। वह तो मैं कल्पित रूप से देखता था। जीवन में परिवर्तन आया। ख्याल आया कि कल्पित रूप को छोड़कर उसको मानव रूप में देखूँ। उसके लिये एक बार २४ घन्टे लगातार रोता रहा। एक दृश्य था जो मुझे महर्षि शिव ब्रतलाल जी के चरणों में ले गया। मैंने उनसे बड़ा प्रेम किया। उन्होंने कहा कि जिसको तू ढूँढता है वह तेरे अन्तर है।

निज घट में खोज पिया को सखी, क्यों भरमे जगत उजाड़ा री।
सतगुरु से ले घट भेद सही, कर सत्संग उनका सारा री ।।

इस समय दुनियाँ में कितना गुरु इज्म है ! सब लोग बाहर के गुरु की जेट भरते हैं। जिस सत्पुरुष ने यह पंथ चलाया है, वह तो यह नहीं कहने कि बाहर के गुरु की भेट भरो। वह तो कहते हैं कि गुरु से भेद लो :—

यह है राधास्वामी मत। आजकल कोई किसी की और कोई किसी की जेट भर बैठा है। इसी कारण झगड़े हो रहे हैं और मुकदमे चलते हैं। कोई कहता है कि बाबा चरनसिंह जी पूर्ण गुरु हैं, कोई कहता है कि हुजूर महता साहब पूर्ण गुरु हैं और कोई किसी की प्रशंसा करता है। और कोई किसी की बदनामी करता है। इसका कारण यह है कि लोगों में अज्ञान है और भ्रम है। हुजूर महाराज ने तो यह कहा है कि सतगुरु से सच्चा भेद लो। शेख तकी जब तुलसी साहब के पास गये तो तुलसी साहब ने कहा :—

दिल का हुजरा साफ कर, जाना के आने के लिये।
ध्यान गैरों का हटा, उसको बिठाने के लिये ।।
मुरशिदे कामिल से मिल, सब्र व सबूरी से तकी।
वह तुझे देगा फहम, शाहरग पाने के लिये ।।

आजकल दुनियाँ गलत ढंग से गुरुओं के पीछे फिरती है। मेरे जिम्मे डयूटी थी। डयूटी क्या थी यह मेरा कर्म था। मैं जब पंथ में आया तो

बाणियों की समझ नहीं आती थी। यह बाणियाँ मेरे लिये गूढ़ रहस्य बनी हुई थीं। उस समय मैंने प्रण किया था कि सच्चा बनकर इस रास्ते पर चलूंगा और जो मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊँगा।

सन्त तो कहते हैं कि गुरु भेद देता है। मुझे अब पेशाब का रोग है। चार दिन का जीवन हैं। क्यों तुमने अपने आपको सन्त सतगुरु कहकर दुनियाँ में प्रसिद्ध किया? मैं चाहे किसी तरह से मरूं या मुझे कोई कष्ट हो, इस ज्ञान से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। एक डाक्टर है। वह किसी रोग का विशेषज्ञ है। हो सकता है कि वह उसी रोग में फंसा हो या वह उसी रोग से मरे मगर उसका वह नुस्खा तो लोगों को लाभदायक है। यह ठीक है कि मुझे पैसे की भी और सेवा की भी इस बुढ़ापे में आवश्यकता है मगर इस लालच में आकर गलत बात कहने को तैयार नहीं। जो कुछ हुजूर महाराज ने इस शब्द में लिखा है कि सतगुरु से भेद लो वही तुलसी साहब ने तकी साहब को कहा।

कादरी साहब! मेरी बात को समझो। जब आप यह समझते हैं कि फकीरचन्द आपके अन्तर आ गया तो आपकी दृष्टि से फकीरचन्द गैर या आपसे अलग है। अतः जब तक कोई आदमी किसी को गैर समझ कर इसके ध्यान में रहता है वह अपने प्रीतम को नहीं पा सकता। आप लोग सत्संग के ख्याल से आये हैं। सत्संग में सच्ची समझ दी जाती है। वह में आप लोगों को दे रहा हूँ।

कल एक आदमी पेठे की मिठाई लाया और कहने लगा कि बाबा जी! यह मैं आपके लिये लाया हूँ। मैंने उठकर कादरी साहब को दे दी कि अपने बच्चे के लिये ले जाओ। अब कादरी साहब यह कहते हैं कि जब मैं घर से चला था तो मेरे बच्चे ने कहा था कि पेठे की मिठाई लाना। ऐसी बातों आप लोगों के दिल में यह ख्याल पैदा होगा कि बाबा अन्तरयामी है लेकि मुझे कोई पता नहीं। मैं स्वयं इस भेद को न समझ सका।

चश्मे दिल से देख यहाँ, जो जो तमाशे हो रहे।
दिलस्तां क्या क्या हैं तेरे, दिल सताने के लिये॥

एक तो यह संसार के बाहरी दृश्य है जिनकी ओर हमारी सुरत खिची रहती है और एक हमारे अन्तरीय दृश्य है। कभी देवी, कभी देवता, कहीं फुलवारी, कहीं राम, कहीं कृष्ण और कहीं गुरु। यह हमारी सुरत को अपनी ओर खेंचते हैं। मुझे इस बात का अनुभव आप लोगों से हुआ। यह कादरी बाबा, भूपसिंह और दूसरे सज्जन मेरे गुरु हैं, जिन्होंने यह कहा कि मेरा रूप उनके अन्तर प्रगट होकर उनके कई प्रकार के काम करता है। इससे मुझे यह सिद्ध हो गया कि यह सब तमाशा है। हम कभी जबरुत में, कभी मलकूत में, और कभी नासूत में फंसे रहते हैं मगर हूत में कोई नहीं जाता। यह मुसलमान फकीरों के शब्द हैं। यह कादरी साहब के लिये कह रहा हूँ। राधास्वामीमत के अनुसार कोई सहसदलकबल में, कोई त्रिकुटी में, कोई सुन्न, महासुन्न में और भंवर गुफा में फंसा हुआ है। यह जितने दृश्य हैं सब हमको फंसाते हैं।

एक दिल लाखों तमन्ना, उस पै और जियादा हविस।
फिर ठिकाना है कहाँ, उसको बिठाने के लिये ।।

किसी को धन की लालसा है, किसी को बेटे की। किसी को यह लालसा है कि बाबा फकीर उसके अन्तर आ जाय। यह भी लालसा और वह भी लालसा। क्या अन्तर है ? आखिर है तो लालसा औरत मन्ना।

नकली मंदिर मसजिदों में जाय, सद अफसोस है।
कुदरती मसजिद का साकिन, दुख उठाने के लिये ।।
कुदरती काबे की तू, महराव में सुन गौर से।
आ रही है धुर से सदा, तेरे बुलाने के लिये ।।

हमारा प्रीतम अपने घर बुला रहा है। मैंने अपने अन्तर बड़े-बड़े तालाब, फुलवारी, सूर्य चन्द्रमा, तारागण देखे हैं। अब इनकी समझ आई कि यह सब दृश्य ही थे। माया थी। असली प्रीतम नहीं था। मध्य प्रदेश का गनेश नामी एक सत्संगी है। उसने बताया कि मैं रात को अपने खेत में मकान पर बैठा हुआ था। मैंने अपने अन्तर में बड़ा

प्रकाश देखा। उसमें बहुत से देवता थे। आप उन देवताओं में से होते हुये मेरे पास आये और कहा कि चल तुझे सावित्री दिखाऊँ। आगे प्रकाश का एक शहर था। प्रकाश की नदी थी। प्रकाश के ही आदमी थे। फिर कहा कि ठहर जाओ। अभी तेरा समय नहीं आया है। वह कहता है कि इसके बाद मेरी आँख खुल गई।

अब गनेश ने तो कहा लेकिन मैं तो गया नहीं। चूंकि मैं नहीं था इसलिये जो कुछ भी उसने अपने अन्तर देखा वह सब तमाशा ही था और उसके मन का खेल था। यदि मैं वहाँ गया होता तो मैं मान लेता कि और जो कुछ इसने देखा है वह भी ठीक है। अतः हमारा घर कहाँ है? मुसलमानों के अनुसार लाइला अल्लाह, जहाँ सिवाय उस जात (निज स्वरूप) के और कुछ नहीं है। वह क्या है क्या नहीं, किसी ने आज तक उसे पाया नहीं। किसी को उसका भेद नहीं मिला। किसी ने उसको अनन्त कहा और किसी ने आश्चर्य रूप कह दिया। किसी ने अविनाशी कह दिया। यह वर्णन शैली है।

क्यों भरमा फिर रहा है, तू तलाशे घर में।
रास्ता शहरग में है, दिलवर को पाने के लिये॥

तुलसी साहब तकी को कहते हैं कि तुम कहां भटकते फिरते हो। वह मालिक तो तेरे अन्तर है। वह तेरा स्वरूप है और तुमसे अलग नहीं मगर इसकी समझ शीघ्र नहीं आती। यदि आ भी जाय तो वहाँ ठहरना बड़ा कठिन है। हो सकता है कि दूसरे सन्त वहाँ ठहरते हों। मैं उस मंजिल को जानता हूँ मगर वहाँ ठहरा नहीं जाता। मन को तो रोक सकता हूँ मगर शारीरिक कष्ट और दिमागी कमजोरी वहाँ ठहरने नहीं देती। फिर भी कोशिश करता रहता हूँ।

मुरशिदे कामिल से मिल, सब्र व सबूरी से तकी।
वह तुझे देगा फहम, शाहेरग पाने के लिये॥

मुरशिदे कामिल (पूर्ण गुरु) क्या देता है? समझ, विवेक और ज्ञान।

यही बात हुजूर महाराज ने अपने इस शब्द में कही है कि सतगुरु से सच्चा भेद लो। मैं जब अपने आपको सतगुरु कहता हूँ तो इसका यह अर्थ नहीं है कि मैंने अहंकार से यह शब्द कहे हैं। सतगुरु नाम है सच्चे ज्ञान का। वह मैं संसार को दे रहा हूँ। यदि आप लोग सत्संग के ख्याल से आये हैं तो मैं सच्चा भेद दे रहा हूँ कि ऐ मानव ! तेरा स्वरूप अकह, अपार, अगाध और अनामी है। हम सब अनामी देश से आये हैं। और वहीं वापिस जाना है।

अदम से जानिबे हस्ती, तलाशे यार में आये।

मुझे पता लग गया कि हम वहाँ से आये हैं। उसकी मौज हुई। उसमें क्षोभ हुआ और हम बन गये। यहां आकर फंस गये। हम क्यों यहां आये ? यह उसकी मौज ! हुजूर महाराज ने स्वामी जी से पूछा कि क्या पता आप फिर हमको दुबारा भेज दें तो उन्होंने कहा कि—

एक बार यह मौज जरूर।

अब दुबारा यह खेल नहीं होगा। इस दुबारा खेल के होने या न होने का पता तो स्वामी महाराज को होगा लेकिन मैंने क्या समझा ! यह जीवन एक ही बार बनता है। जिसको समझ नहीं आती वह इन खेलों में फंसा रहता है और बार-बार जन्म मरण में आता रहता है। जिसको ज्ञान हो जाता है वह इन खेलों में फंसता नहीं। अतः वह बार-बार नहीं आता और उसका आवागमन समाप्त हो जाता है। जब आदमी को संसार से वैराग हो जाता है, वह फिर इस संसार में आ ही नहीं सकता। जब तक जीवन है तमाशे तो रहते हैं लेकिन जिसको समझ आ जाती है वह उनमें फंसता नहीं मगर कष्ट के समय इस ज्ञान को भूल जाता है और फिर दुख से बचने का ख्याल पैदा होता है।

सतगुरु से ले घट भेद सही, कर सत्संग उनका सारा री।
तन मन और इन्द्री रोक चलो घुर, सतगुरु चरनन धारा री॥

सतगुरु के सत्संग से बात को समझो। पहिले सतगुरु से प्रेम करो और

अपने मन को अन्तर में ठहराओ। मन को ठहराने के लिये सन्तों ने सुमिरन ध्यान बताया है। ऊँची शिक्षा नहीं बताई। जब मैं बसरा बगदाद में था तो दाता दयाल जी ने मुझे आज्ञा दी थी कि जो कोई तुम से पूछे उसको सुमिरन और मेरे रूप का ध्यान बता दिया करो। जब उसका मन एकाग्र हो जाय तो फिर उसको मेरे पास भेज दिया करो। अब समझ आई है कि जब तक सुमिरन ध्यान से मन इकट्ठा नहीं होजाता, आदमी ऊपर नहीं जा सकता। सुमिरन ध्यान प्रेम से होता है। इसलिये पहले मन को एकाग्र करो चाहे किसी नाम और रूप से करो।

धुन घट में सुन सुन अधर चढ़ो, जहां बहती निर्मल धारा री ॥

निर्मल धारा क्या है? अपनी सुरत को निर्मल करना। जब मन में विचार नहीं उठते तो उसका नाम निर्मल धारा है।

कलिमल धोय हुई सुरत निर्मल, लखती जोति उजारा री ॥

कलिमल क्या है? कलि है कलियुग। कलियुग में बुद्धि बढ़ जाती है और मनुष्य के सुख दुख का कारण बन जाती है।

बंक पार धुन गगन सुनी सुन्न में, जाय निरख बहारा री ॥

मैंने १२–१२ घण्टे अभ्यास किया है। बक कहते हैं टेढ़े रास्ते को। कभी नीचे जाना कभी ऊपर आना। जब हमको नींद आने लगती है तो पहिले गुनूदगी आती है। फिर तुम शरीर को भूल नींद में चले जाते हो। अब स्वप्नावस्था में आगये। इसका नाम बंकनाल है। ऐसे ही साधन में आदमी शरीर को भूल जाता है। जाग्रत और स्वप्न के बीच एक बंकनाल है। स्वप्न और नींद के बीच दूसरी बंकनाल है। नींद और सुषुप्ति के बीच तीसरी बंकनाल है। यह सब भान बोध हैं।

मेरी समझ में खुदा है नूर या प्रकाश। मैं कोशिश करता रहता हूं मगर जब मन में आता हूँ तो गुरु स्वरूप का ध्यान करता हूँ। शारीरिक और मानसिक भान बोध होते हुये गुरु स्वरूप का ध्यान आवश्यक है। जब ऊपर जाओ तो प्रकाश और शब्द को पकड़ो। लेकिन यह भी किसीके अपने वश की बात नहीं है। सब प्रारब्ध कर्म है। पिछले कर्मों के अनुसार कोई

गुरु बन जाता है, कोई चेला बन जाता है। कोई अमीर और कोई गरीब। इस का कोई सम्बन्ध इस जगत से नहीं है।

महासुन्न परे लख भँवरगुफा, सतपुरुष दर्श निहारा री ॥

हुजूर महाराज को कौनसा सत्पुरुष अन्तर में मिला, यह मुझे पता नहीं। मुझे तो प्रकाश और शब्द मिला। इसके अनुभव को मैं सत्पुरुष समझता हूँ। हो सकता है मेरा अनुभव गलत हो मगर मुझे इतना याद है कि "सारी दुनियां" नामी पत्र में बाबा सावनसिंह जी महाराज ने सतलोक की व्याख्या करते हुये कहा था कि वहाँ बड़ा आनन्द है।

मैं इन धर्म सम्प्रदायों को एक करने के लिये आया हूँ। असलियत वर्णन करने से यद्यपि डेरे नहीं बनते किन्तु लोगों के भ्रम दूर होजाते हैं। असलियत यह है कि खुदा है नूर या प्रकाश। उसी से समस्त संसार पैदा होता है। इस बाहर के सूर्य से बनास्पति, पशु और जड़ पदार्थ आदि बनते हैं। सोहंग पुरुष का सूर्य विचार और संकल्प के जगत को पैदा करता है। सतलोक का सूर्य प्रकाश है और उसी से हमारी आत्मा प्रकट होती है -

कोई समय था जब तरह तरह के विचार मेरे अन्तर उठा करते थे। अब में मन के मण्डल से निकल गया। केवल इस ख्याल से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, मेरा जीवन बदल गया।

अलख अगम के पार लख, राधास्वामी धाम निहारा री ॥

पता नहीं राधास्वामी धाम से क्या अभिप्राय है। मैंने जो समझा वह यह है कि सुरत जब शब्द में लय होजाती है तो उसका नाम राधास्वामी धाम है। जो सच्चा ज्ञान मुझे प्राप्त हुआ वह मैंने बता दिया। मगर तुम लोग तो दुनियाँ चाहते हो, इसलिये तुम लोगों को एक बात बताये देता हूँ कि अपने मन को आशावादी रक्खो। 'शिवसंकल्पमस्तु' को अपनाओ। चूंकि संकल्प से ही संसार की रचना होती है। अतः अपने विचार को ठीक रक्खो। नेक कमाई करो। किसी दुखी की सहायता करो। रह गई अन्तिम अवस्था यह हर एक के भाग्य की बात है। 'नानक कोटिन में कोऊ, नारायन जिन चेत'।

भक्त गाथा

मनसुख दास जी की कथा

(ले० महर्षि 'शिव')

मनसुख दास जी जाति के कायस्थ थे। भगवान के सच्चे प्रेमी ! भक्ति के नाम पर जान देने वाले ! भक्तों की सेवा तन मन से करने वाले ! जैसे कामी को स्त्री से और लालची को धन से प्रेम होता है वैसे ही इनको भक्तों के साथ प्यार था।

बेचारे निर्धन हो गये। धन द्रव्य साधु सेवा में खर्च कर बैठे। दरिद्रता दुखदाई होती है। सब लोग इनकी हँसी उड़ाने लगे। दुष्टों का हर जगह यही व्यवहार होता है। औरों के साथ चाहे छेड़ छाड़ न करें परन्तु भक्तों को दुख देने से कभी नहीं चूकते। जिसको देखिये वह फबतियाँ उड़ाता रहता था। यह सब की सुनते और सहते थे।

जब पैसों तक का ठिकाना नहीं रहा एक दिन किसी साधू ने आकर मिठाई मांगी। घर में बरतन भांड़े तक नहीं रहे। स्त्री की नाक में केवल केवल नथ रह गई जिसे उसने सोहाग का चिन्ह समझ कर रख छोड़ा था। और सब गहने भी बिक बिका गये थे और साधुओं ही के काम आये थे। इन्होंने उससे कहा। वह भी बड़ी भक्तिनी थी और इनसे अधिक प्रेम वाली थी। उसने प्रसन्नता से अपनी नथ को उतार दिया और कहा इसको लेजा कर गिरवी रख आओ और साधु सेवा करो। यह प्रसन्न होकर गये और किसी बनिये के पास से रुपये लाये। साधू को भोजन कराया, कुछ रुपयों से घर के लिये भी खाने पीने की सामग्री लाये थे। स्त्री से कहने लगे "कई दिनों से उपवास करते करते मन दुखी होगया है। तू रोटी बना। मैं और साधू की खोज में जाता हूँ। कोई मिल जाये तो उसके हाथ से भगवान का भोग लगे, तब हम दोनों भी प्रसाद पायें"।

यह कह कर वह तो बाहर चले गये। इधर एक मनुष्य मनसुखदास जी के रूप का आया। स्त्री चौका लगा रही थी, इसे देखकर बोली "कैसे शीघ्र ही आ गये ?" उसने कहा ले अपनी नथ पहिन ले। यह तेरे सोहाग का चिन्ह है। बनिये ने दया करके लौटा दी है। जब रुपया आयेगा दे दिया जायगा।" स्त्री ने कहा "मेरे हाथ शुद्ध नहीं हैं, या तो ताक पर रख दो या मुझे आप ही पहिना दो।" उसने वह नथ उसकी नाक में डाल दी।

जब मनसुख दास साधू को लिये हुये घर आये तो स्त्री की नाक में नथ देखकर दंग रह गये, । पूछा "यह नथ कैसे आ गई ?" वह हँसी "वाह ! अभी तो तुम ही आकर अपने हाथ से पहिना गये और अब पूछते हो कि यह कैसे आ गई। अभी तो दो चार पल भी नहीं हुये।" इतना सुनना था कि मनसुख दास की आँखों से आंसू बहने लगे। वह समझ गये कि भगवान के सिवा और कौन ऐसे चरित्र कर सकता है ! स्त्री के पांव छूने के लिये दौड़े। यह बोली "यह क्या करते हो ! मुझे काँटों में न घसीटो।" उन्होंने कहा "तू बड़ी भाग्यवान है। भगवान ने आप तुझे यह नथ पहिनाई है और अचल सोहाग का वर दिया है। जब भगवान ने दया करके तेरे शरीर को हाथ लगाया तो तुझ से अधिक पूजनीय कौन हो सकता है।"

यह सुनना था कि स्त्री भी प्रेम से गदगद होकर बेसुध हो गई। जब चेत हुआ तो स्त्री पुरुष दोनों भगवान की स्तुति करने लगे।

उस दिन तो साधू के आने के विचार से मनसुखदास ने भोग लगा लिया परन्तु मन में दुख हुआ "हाय स्वामी ! मैंने क्या अपराध किया था कि मुझे तो दर्शन नहीं हुआ और इस स्त्री पर ऐसी दया हुई।" भजन भाव तो करते ही थे परन्तु दर्शन न होने का दुख मन से भुला नहीं सकते थे। रात को भगवान ने स्वप्न दिया "मनसुख दास ! सोच न करो। कुछ दिनों काशी में जाकर रहो, वहीं दर्शन होगा।" दूसरे ही दिन यह काशी जी चले आये। स्त्री भी साथ थी। वहां तप करने लगे। खाना पीना छोड़ दिया। केवल एक नाम का आधार था। जब तप पूर्ण हो चुका तब भगवान ने उन्हें अपना

चतुर्भुज रूप दिखाया। दर्शन पाते ही ऐसे मग्न और बेसुध हो गये कि समाधि लग गई। जो दशा योगियों की होती है इनको केवल तप और नाम लेने से प्राप्त हो गई। उसी अवस्था में भगवान ने कहा "मनसुख दास ! वर मांगो।" उन्होंने उत्तर दिया "जो मुझे पाना था पा गया। अब यह आपका रूप मेरे लिये बराबर प्रगट रहे। क्षणमात्र के लिये भी आंखों से ओझल न हो। व्यवहार और परमार्थ में बराबर दर्शन होता रहे।" भगवान बोले "ऐसा ही होगा और सचमुच ऐसा ही हुआ। स्त्री पुरुष दोनों ही जीवन पर्यन्त भजन और भक्ति में मस्त रहते थे और बहुत दिनों के पीछे परमधाम को गये।

शब्द

प्रेम की लीला अद्भुत न्यारी, प्रेम की अकथ कहानी।
प्रेम दात का दान मिले गुरु, भक्ति करूँ मनमानी ॥१॥

मान न दो सम्मान न दो प्रभु, धन दौलत नहिं देना।
भक्ति रतन धन का अधिकारी, नाम तुम्हारा लेना ॥२॥

तन मन धन सब तुम पर वारूँ, सांस प्राण के संगा।
मन मोहनी छवि रहै दृष्टि में, हो न कभी चित भंगा ॥३॥

मुक्ति ज्ञान की चाह नहीं है, एक तुम्हारी आसा।
सेवक कर लो दास बना लो, पूरण प्रेम बिलासा ॥४॥

राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी गाऊँ।
राधास्वामी चित्त बसाऊँ, गुन गा गा हरखाऊँ ॥५॥

प्रवचन

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर, होशियारपुर ११-१-७३)

गुरु चरण कँवल में बिनय करूँ ।
विश्वामित्र विश्व हितकारी, विश्वम्भर विश्वासी ।
अपनी दया से पार लगादे, कटे बन्ध चौरासी ।।
करुणामय करुणा के सागर, करुणा के भंडारा ।
काम क्रोध से मुझे छुड़ाकर, ले चल भव के पारा ।।
दीन हितैषी दीन दयाला, दीन अधीन सहाई ।
दीन समझ भक्ति दे मुझको, लहूँ चरण शरनाई ।।
गुण की खानी गुण में आगर, गुण नागर गुणकारी ।
औगुण मेट के गुणी बनादे, करदे मोहि सुखारी ।।
राधास्वामी भक्ति पदारथ, का हूँ मैं अभिलाषी ।
प्रेम भाव हिये अन्तर आवे, भजूं गुरू अविनाशी ।।

बाहर में मैंने भी दाता दयाल महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज के चरणों में विनय की थी । बड़ा रोया करता था । मैं क्या चाहता था । पता नहीं मगर कुछ चाहता था ।

इस वार मैं सरसोंहेड़ी (सहारनपुर) गया । वहाँ कई आदमियों ने मुझे अपनी घटनायें सुनाईं जिनको सुनकर मेरी बुद्धि चकरा गई । गुरु ने मुझ पर यह दया की कि मुझे असली और सच्चे गुरु का रूप बता दिया और सच्ची भक्ति का मार्ग बता दिया । अपने अन्तिम समय पर कई लोग कहते हैं कि बाबा जी आगये । बाबाजी पालकी लेकर आगये । कोई कुछ । लेकिन मुझे कोई पता नहीं होता । मुझे अपना कोई पता नहीं कि मृत्यु के समय मेरे साथ क्या होगा ।

राधास्वामी भक्ति पदारथ, का हूँ मैं अभिलाषी ।
प्रेम भाव हिये अन्तर आवे, भजूं गुरू अविनाशी ।।

अब जो लोग फकीरचन्द को भजते हैं तो फकीरचन्द तो एक दिन मर जायगा । यह फिर अविनाशी कैसे हुआ । बाबा सावनसिंह जी महाराज यदि अविनाशी होते तो मरते क्यों ? रामचन्द्र जी और कृष्ण जी यदि अविनाशी होते तो मरते क्यों ? जो दया मुझ पर हुई मैं वह कहता हूँ मगर कोई सुनने को तैयार नहीं । मैं अविनाशी के रूप को जान तो गया मगर यह मन फिर भी नीचे खींच लाता है । वहां अभी तक मुझसे ठहरा नहीं जाता । असली भक्ति अविनाशी गुरु की है । जब तक कोई अविनाशी गुरु में नहीं जाता, उसका आवागमन समाप्त नहीं होता । यही रामायण में लिखा है कि जब रामचन्द्र जी ने लंका को जीत लिया तो वहाँ रामचन्द्र जी के पास सब देवता आये और महाराज दशरथ भी आये । चूंकि राजा दशरथ राम के सगुण रूप से प्रेम करते थे इसलिये वह मोक्ष को प्राप्त नहीं हुए । उस समय राम चन्द्र जी ने दृढ़ ज्ञान दिया तब महाराज दशरथ मुक्त हुये । रामायण में लिखा है कि सगुण के उपासक को मोक्ष नहीं है । सगुण है देहधारी ।

रामचन्द्र जी और कृष्ण जी देहधारी थे । यह सब गुरु देहधारी थे फकीर देहधारी है । राय साहब सालिगराम जी महाराज ने भी अपनी "प्रेम बाणी" में लिखा है कि अन्त समय गुरु आ जाता है । शब्द भी सुना देता फिर वह जीव कुछ समय के लिये ऊपर के लोकों में रहता है । जब कोई सं सत्गुरु इस संसार में आता है तो फिर वह जीव दुबारा जन्म लेकर उस सं सत्गुरु के संपर्क में आता है और अपनी कमाई पूरी करता है ।

जो कुछ रामायण कहती है वही हुजूर महाराज ने कहा है । महार दशरथ ने रामचन्द्र जी के मोह में शरीर त्यागा इसलिए वह मुक्त नहीं हु किसी ने बाबा फकीर के मोह में शरीर त्यागा, किसी ने अपने पुत्र के म में शरीर त्यागा और किसी ने अपने गुरु के मोह में शरीर त्यागा । मोह मोह ही है । वह कैसे मुक्त होगा ।

लोगों के अज्ञान के बारे में आपको एक घटना सुनाता हूँ। मेरे मकान से थोड़ी दूर पर एक बुढ़िया बीमार थी। कई दिनों से बेचारी बहुत तड़प रही थी। उसकी जान नहीं निकलती थी। गोपाल दास की स्त्री ने मेरी लड़की सुरतप्यारी को बताया कि अमुक बुढ़िया कुछ दिनों से तड़प रही है और उसके प्राण नहीं निकलते। मेरी लड़की ने कहा कि चल में उसकी जान निकालती हूँ। वह उसके वहां गई। वहां जाकर सुरतप्यारी ने कहा कि मुझे इस बुढ़िया का मुंह दिखाओ। जब उन्होंने उसके मुंह से कपड़ा हटाया तो सुरतप्यारी ने कहा कि 'मरजा माई'। इतना कहने की देर थी कि बुढ़िया के प्राण निकल गये। सब लोग हैरान होगए और बहुत सी स्त्रियां सुरतप्यारी को मत्थे टेकने लगीं। अब स्त्रियों में बातचीत होने लगीं और उसकी प्रशंसा करने लगीं। किसी ने कहा कि यह लड़की बड़ी भारी सन्त है। किसी ने कहा कि यह सन्त की लड़की है। किसी ने कुछ किसी ने कुछ।

क्या सुरतप्यारी ने उस बुढ़िया की जान निकाली? नहीं। संयोग की बात थी। उस बुढ़िया की जान तो निकलनी ही थी। सुरतप्यारी तो उन्मत्त है या अर्द्धपागल है। उन लोगों ने उसे सन्त बना दिया। यह है अज्ञान।

मेरे साथ ऐसी कई घटनायें हुई हैं। सुनाम में एक व्यापारी की लड़की को चेचक निकली हुई थी। उसको बड़ा कष्ट था और उसका प्राण नहीं निकलता था। वह मेरे पास आया और कहने लगा कि आप महात्मा हैं। मेरी लड़की के प्राण नहीं निकलते। उसे बड़ा कष्ट है। मैंने कहा कि मैं जाकर क्या करूंगा। उसने हठ की और मैं उसके साथ चला गया। उसके बाद लड़की मर गई। क्या मैंने कुछ किया। उसने मरना ही था। उसका समय आया हुआ था। दुनियां इन बातों के भ्रम में आगई है। ऐसी ऐसी बातों से इन महात्माओं ने दुनियां को लूटा है।

व्यास! तुम इन बातों में फंसे हुए हो। इसीलिए मैं तुम्हारे पास नहीं आता। गुरु की यह दया है कि वह सत्संग कराकर जीवों को ज्ञान देता है और असलियत समझा देता है।

बिन सत्संग न पाइये, गुरु गम ज्ञान विचार।

सत्संग के बिना यह भेद कोई नहीं पा सकता। यह हकीकत है जो मैं संसार को बता रहा हूँ। इसीलिये मैंने मानवता मन्दिर बनाया है। मुझे ऐसे आदमी इस शिक्षा के प्रचार के लिये चाहियें जो अपना स्वार्थ और अपना मान न रक्खें। किसी को लूटें नहीं और सचाई पर मर मिटें। आप लोगों को मैंने अपनी लड़की का उदाहरण दिया है और अपनी घटना बताई है।

बहेड़ी गांव में जो स्त्री मरी उसका लड़का फौज में नौकर था। पाकिस्तान के साथ जो लड़ाई हुई उसमें वह लापता था। उसको तार आया कि उसका लड़का लापता है। वह बहेड़ी में एक स्त्री के पास आई। वह भक्तिनी थी। उससे कहने लगी कि दया करके बताओ कि हमारा लड़का जिन्दा लौट कर आयेगा या नहीं। उसने कहा कि ठहरो! मैं बाबा जी से पूछ कर बताती हूँ। वह अभ्यास में चली गई। थोड़ी देर के बाद कहने लगी कि बाबा जी कहते हैं कि वह जिन्दा लौट कर आयेगा।

वह फौजी कैदी था। अब वह आगया है। क्या मैं उस स्त्री से कहने गया था कि वह लड़का जिन्दा वापिस आ जायगा? यह उसके अपने मन का खेल है।

मैं भवसागर से कैसे पार कर सकता हूँ। मैं सच्चा ज्ञान देता हूँ कि ऐ इन्सान! तेरे अन्तर जो भाव विचार पैदा होते हैं यह सब माया है। जहां से तू आया है वह है परब्रह्म और शब्दब्रह्म। तू उसको पकड़। वही सच्चा गुरु है। रामायण भी यही कहती है कि जब तक कोई आदमी प्रेम और भक्ति से परे नहीं जाता उसका आवागमन समाप्त नहीं हो सकता है। राजा दशरथ ने रामचन्द्र जी के वियोग में प्राण त्यागे। रामायण के अनुसार वह मुक्ति प्राप्त न कर सके मगर यह तुम्हारे वश की बात नहीं है। तुमको क्या कहूँ, मैं सब कुछ जानते हुए भी गिरता रहता हूँ मगर मैं संभल जाता हूँ।

जिस रूप पर तुम्हारा विश्वास है उसको अविनाशी मानो। जब तक तुम्हारी यह अवस्था नहीं आयेगी तब तक तुम पार नहीं जा सकते। रामायण में लिखा है कि वह जो राम है जो घट घट में व्यापक है उस राम में से करोड़ों चन्द्रमा सूर्य निकलते हैं। उस राम को अपना इष्ट बनाओ।

मेरे पास क्या है ? मैं संसार में सत वस्तु को जानने और सचाई वर्णन करने आया हूँ। मैं न हेराफेरी करके बात करता हूँ न दूसरों से अपना प्रोपेगण्डा करवाता हूँ कि हाँ बाबा फकीर के प्रशाद से लड़का होगया या यह काम होगया वह काम होगया। बाबा अमरीका और इन्गलैण्ड में प्रगट होता है और बाबा के बहुत से अंग्रेज चेले हैं। यह सब पाखंड जाल है।

प्रेम

(ले० सेठ दुर्गादास, चण्डीगढ़)

प्रेम की महिमा बड़ी अपार है। प्रेम मनुष्य को अध्यात्म की अन्तिम श्रेणी तक पहुंचाता है। प्रेमी को इस जगत में यश मिलता है और मान मिलता है। प्रेमी के दर्शन ईश्वर के दर्शन के तुल्य हैं क्योंकि प्रेम में ईश्वर की शक्ति विराजमान है। ईश्वर का स्वरूप प्रेम है। मनुष्य ईश्वर का अंश है।

जिन प्रेम किया, तिन प्रभु पायो।

प्रेमी का चेहरा प्रकाशमान, दृढ़ चित्त और वह साक्षात् शान्ति का रूप होता है। हर समय हर एक के साथ भलाई के लिये तत्पर रहता हैं। उस की संगत से आनन्द मिलता है। कबीर साहब का कथन है :—

जा घट प्रेम पंछी बासा करे, और पंछी रहे न कोय।

कबीर साहब के कितने सुन्दर वाक्य हैं कि जिसके हृदय में प्रेम होता है, वहाँ पर अन्य पंछी नहीं रह सकते। दूसरे पंछियों से उनका अभिप्राय यह प्रतीत होता है कि घृणा, द्वेष, कीना, परायापन, शत्रुता, निर्धनता आदि नहीं रह सकते।

बिना प्रेम के मनुष्य का कोई जीवन नहीं। बिना प्रेम के जीवन अन्धकार होगा। कबीर कहते हैं :—

जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान ।।

बच्चे को देखो ! वह प्रेम का साक्षात् दृश्य है । माँ से प्रेम, पिता से प्रेम, मिलने वालों से प्रेम । इसके चारों ओर प्रेम ही प्रेम है । जो मनुष्य चित्त का कठोर हो, वह भी किसी बच्चे को देखकर प्रसन्न और प्रेमवश हो जायगा क्योंकि प्रेम मनुष्य में स्वाभाविक है ।

प्रेम के तीन रूप होते हैं—स्थूल, सूक्ष्म और कारण । किसी का प्रेम धन से है, किसी का घर से, संतान से या स्त्री से, माता पिता से, आदि आदि । यह प्रेम का स्थूल रूप है । शरीर में रहते हुए मनुष्य का प्रेम जब होगा, स्थूल वस्तु से होगा ।

सूक्ष्म प्रेम का रूप दूसरा है । दानी प्रेम से दान करता है । दीनों पर दया करता है । पण्डित का प्रेम अपने पूजा पाठ से है । शेखचिल्ली अपने मन के किले बनाने में मस्त है । फिलौस्फर फिलौस्फी में, ज्ञानी ज्ञान में, सत्संगी सुमिरन ध्यान में आनन्द लेता है । यह प्रेम के सूक्ष्म रूप हैं । प्रेम के कारण रूप का वर्णन कठिन है । वह सन्तों और परमसन्तों का काम है। वह इस प्रेम को भली भांति जानते हैं । अपने इष्ट से अन्तर में प्रेम करना होता है ।

प्रेम तो पशुओं में भी देखने में आता है । पशुओं का प्रेम देखकर मनुष्य दंग रह जाता है । कुत्ते की वफादारी, बन्दर का मालिक से प्रेम, रीछ का कामिनी से प्रेम । इनकी कहावतें बन चुकी हैं ।

आपको एक सच्ची कहानी सुनाते हैं । मेरे पिता जी गांव में दुकान करते थे । उन्होंने एक तोता पाल रक्खा था । वह तोता बहुत बातें किया करता था । यदि कोई ग्राहक दुकान पर आता और मेरे पिता जी दुकान पर न होते तो तोता कहता था—चाचा ! सौदा दे, चाचा सौदा दे । जब खाने का समय होता, इसको भूक लगती । वह कहने लगता, चाचा चौरी दे, चौरी दे । इसके अतिरिक्त और कई बातें करता था ।

लटपट पंछी चतुर सुजान । सबका दाता राम भगवान ।।

तोते का पिता जी से और पिता जी का तोते से बड़ा प्रेम था। तोते को समय पर चौरी, दूध और पानी मिलता था। यहाँ तक कि पिंजरे का दरवाजा खोल दिया तो तोता बाहर नहीं निकलता था। न दुकान को छोड़कर उड़ता था।

यह सन् १९३७ की बात है। मेरे बच्चों को तोता प्यारा लगा। हठ करने लगे। अन्त में पिता जी राजी होगये और तोते को करांची साथ ले गये। करांची पहुँच कर तोते ने खाना पीना छोड़ दिया। लोगों से पूछा गया, किसी ने घास खिलाने को कहा. किसी ने फल किसी ने हरी मिर्च लेकिन तोता कुछ न खाता और बोलना बन्द कर दिया। किसी के कहने पर पिंजरे का द्वार खोल दिया गया। वह पिंजरे से बाहर आया लेकिन उड़ा नहीं। मेरे मकान में तीन कमरे और एक बरामदा था। तोते ने सारे घर का चक्कर लगाया। इसने कौना कौना ढूंढ मारा लेकिन इसको चाचा न मिले और इसने प्राण त्याग दिये। क्या कोई मनुष्य ऐसा प्रेम करेगा।

एक और रुचिकर बात सुनिये। प्रेम का पूर्ण दृश्य पशुओं में देखिये। वह दृश्य देखकर मनुष्य का सिर लज्जा से झुक जाना चाहिये। मनुष्य अपने आप को देखे। मनुष्य ने इस संसार को शोकागार बना रक्खा है।

एक आदमी ने मुर्गियां और कबूतर पाल रक्खे थे। उनकी रखवाली को एक कुत्ता भी था। एक बिल्ली पाल रक्खी थी। कुत्ते और बिल्ली का खाना मुर्गी और कबूतर है। स्वभाव से ही कुत्ता और बिल्ली मुर्गी और कबूतर पर हमला करेंगे। मगर वाह रे प्रेम! वह सब इकट्ठे रहते, इकट्ठे खाते पीते थे। कुत्ता इन सबकी चौकीदारी किया करता था मगर एक दूसरे पर हमला नहीं करते थे। ऐसा क्यों था? क्योंकि वह जानते थे कि इन सबका मालिक एक ही है। सबका अपने मालिक से प्रेम हो चुका था। वह जानते थे कि हम सब उसके प्रेमी हैं। फिर आपस में कैसे शत्रुता हो सकती है। वाह रे प्रेम! ऐसा प्रेम का दृश्य कहां दिखाई देगा।

सब मनुष्य भी तो एक ही मालिक की संतान हैं। यह सदा यह कहते रहते हैं कि ईश्वर ने इस संसार को बनाया है। वह सबका मालिक है।

सबका पिता है। फिर मनुष्य को मनुष्य से घृणा क्यों? हम एक दूसरे से घृणा करते हैं। धोका देते हैं। कत्ल करते हैं। कुकर्म करते हैं। ऐ मानव! तू पशुओं और पक्षियों से प्रेम करना सीख! आपस में प्रेम करना सीख! तेरे प्रेम से यह दुनियाँ स्वर्ग बन सकती है।

यदि मनुष्य अपने अन्तर में अपने इष्ट देव से प्रेम करना सीख ले तो आवागमन से छुटकारा मिल सकता है। यह प्रेम बिना सत्संग प्राप्त नहीं होता। ऐसे प्रेम की विधि गुरु बताता है। जिनकी ऐसी प्रकृति होती है उनको यह प्रेम प्राप्त होता है।

जिस पर कृपा आदि कर्त्ता की, वह यह न्यामत पावे ॥

बिना भाग्य के यह वस्तु नहीं मिलती। प्रेम का मार्ग अपना लो। प्रेम धीरे-धीरे रंग लायगा और प्रेमी को सतगुरु के दर्शन अवश्य होंगे।

दुखियों का तू सहारा स्वामी, नाम तेरा है करतारा ॥टेक॥
निर्गुन सगुन रूप प्रभु तेरा, निराकार और साकारा।
वार पार कोई कैसे पावे, वेद कहे अपरम्पारा ॥दुखियों०
अन्तरयामी घट घट बासी, अविनासी जगदाधारा ॥
जब लग दया दृष्टि नहीं तेरी, जाये न कोई भवजल पारा ॥
पतित उद्धरन भव भय तारन, कारन कारज करतारा।
दीनबन्धु करुना के सागर, आगर अद्भुत रखवारा ॥
टूटी नाव पड़ी भवसागर आन पड़ो है मंझधारा।
काढ़ निकारो करुना सिंधु, वेग सुनो मेरी भरतारा ॥दुखियों०
रात अंधेरी डगर न सूझे, बूड़त हूँ भव जल धारा।
राधास्वामी दया के सागर, अब तो करो मेरा निस्तारा ॥

विश्व धर्म

[तृतीय भाग]

मंगलम् अशब्द अरूप, शब्द रूप स्वामी ।
मंगलम् अलख अनाम, अगम नाम नामी ॥
मंगलम् ऐ दीन बन्धु, दीनानाथ दाता ।
मंगलम् अभेद भेद, आनन्द घन त्राता ॥
महिमा अनन्त आदि, अन्त कौन गावे ।
भेद तेरा कौन जाने, कौन कह सुनावे ॥
सन्त भेष प्रगट जगत, जीव को चिताया ।
काल कर्म फन्द काट, घर ले पहुंचाया ॥
प्रथम तत्व निज स्वरूप, पद कमल नमामी ।
गाऊँ ध्याऊँ रात दिवस, भजूँ राधास्वामी ॥

मैं इस बार दसहरे के अवसर पर दिल्ली आया तो मुझे श्री सुशील कुमार जी महाराज ने बताया कि फरवरी १९७४ में विश्व धर्म सम्मेलन होगा और आप उस सम्मेलन में पधारें और दर्शन दें। थोड़े दिन पश्चात् मुझे सन्त कृपाल सिंह जी महाराज का पत्र मिला कि वह इस बार विश्व मानव एकता सम्मेलन मना रहे हैं, उन्होंने भी मुझे नैवेद दिया। मेरा स्वभाव सत्यप्रिय है, अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि इस संसार के साम्प्रदायिक क्षेत्र में मानव एकता सम्मेलन के विषय में अपनी राय प्रकट करने का क्या तुमको अधिकार है ? मैंने १५ अगस्त १९४७ को "मनुष्य बनो" नामी पुस्तक प्रकाशित करवाई और निज अनुभव के आधार पर मानवता मन्दिर की स्थापना की, मैं छोटी आयु से ही उस मालिक को मिलने के

लिये निकला था जिसने यह जगत रचा, जो सर्वाधार है और जिसको संसार के प्राणी नाना रूपों में मानते हैं, इस क्रम में मौज मुझे हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के चरण कंवलों में ले गई। उस पुनीत विभूति ने मुझ पर अत्यन्त दया की, उन्होंने मुझ अज्ञानी, मूर्ख और कामी को शरण दी, नाम दान दिया, आश्रय दिया, मुझ से खेल खिलाया और मुझे उस सर्वाधार का पता दिया जिसकी मैं खोज करता था, एक शब्द में वह लिखते हैं।

तू है क्या तू मरकजे, आलम है ऐ मरदे फकीर।
फिर रही है गिरद तेरे, दुनिया खुद होकर असीर।।
खुद है तू 'ए' और 'अलिफ' के वसूफ से हरदम जुदा।
'ए' मिली आयी खुदी, जब है अलिफ तब है खुदा।।
यह सिफ़ाती नाम सारे, खुद है तू सबका असल।
सबके सब औसाफ क्या हैं, असल के हैं यह सब नकल।।
असल तू है मक्सदे, कोनैन तेरी नकल सब।
ज्ञान ध्यान और गौर, क्या हैं तेरी ही है अकल सब।।
नूर से तेरे मुनव्वर, आसमां के मेहरोमाह।
तेरी ही अजमत के हैं, यह अक्स कदरो इज्जो जा।।
तू है दाना, तू है नादाँ, दोनों तुझसे हैं अयाँ।
इन के परदों में हमेशा, जात तेरी है निहाँ।।
तहतो फौको वसत का, तेरे ही ऊपर इन्हसार।
जान कर अनजान है, अनजान का है जानकार।।
तू न अकलोहोश है, और तू कहां बेहोश है।
खेल में है इनके मायल, हस्ती में मदहोश है।।
जागता है सोता है, दोनों से जब ऊँचा चढ़ा।
जात का अपने यहाँ, आया तो पाया है पता।।
इस पते की भी तुझे, दर असल कुछ परवाह नहीं।
तेरे जैसी शान का, कोई आज तक देखा नहीं।।

यह शब्द हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे चेताने के लिये लिखा था, इसकी मुझे समझ नहीं आती थी, यह ज्ञान प्राप्त कराने के लिये कि मैं वास्तव में क्या हूँ, उन्होंने मुझे यह गुरु पदवी प्रदान की थी अर्थात् गुरुयाई करने का कर्त्तव्य सोंपा था। हुजूर दाता दयाल जी महाराज की पवित्र विभूति ने, जिनको मैं परम तत्व आधार तथा सच्चे राम का अवतार मानता था, उन्होंने मुझे और भी लिखा था :—

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा।
दुःखी जीव को अंग लगाकर, लेजा गुरु के देसा।।
तीन ताप से जीव दुःखी हैं, निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का, भाई नाम दान दे दानी।।

एक और शब्द में वह मुझे लिखते हैं :—

तेरा रूप है अद्भुत, अचरज तेरी उत्तम देही।
जग कल्यान जगत में आया, परम दयाल सनेही।।

अतः इन कर्तव्यों को निभाने तथा इस ऋण को चुकाने के लिये मैंने अपने जीवन के निज अनुभवों के आधार पर, जोकि कुछ तो मुझे हुजूर दाता दयाल जी महाराज के संस्कारों से, कुछ उन (सतसंगियों) के अनुभवों द्वारा जिन्होंने कि मुझे गुरु माना तथा कुछ उच्च कोटि के सन्तों की बाणियों द्वारा मुझे प्राप्त हुये, यह जान कर कि सर्व साधारण तो सचाई तथा शान्ति के इच्छुक नहीं हैं, यह तो सांसारिक सुखों के इच्छुक हैं, और तीसरे १९४७ में देश की परस्थितियों से प्रभावित होकर मैंने "मनुष्य बनो" की घोषणा की तथा जो आध्यात्मिकता अथवा उससे भी परे परम सत्य तथा यथार्थ ज्ञान के इच्छुक हैं, उनको अलग शिक्षा दी, किन्तु ऐसे व्यक्ति बहुत थोड़े हैं।

कुछ वर्षों से सन्त कृपाल सिंह जी महाराज तथा मुनि सुशीलकुमार जी महाराज ने इन विश्व धर्म सम्मेलनों का क्रम प्रारम्भ किया। मैंने भी अपना कर्तव्य पालन करने के लिये प्रत्येक सम्मेलन पर कुछ न कुछ लिखा, यद्यपि मुझे सर्व साधारण के सम्मुख कुछ कहने का अवसर नहीं दिया गया

था। यदि दिया तो वह भी केवल एक बार सात आठ मिनट तथा पचास रुपये प्रवेश शुल्क के रूप में देना पड़ा। पिछले कुछ मास बीते, सन्त कृपालसिंह जी महाराज ने, हुजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के जन्म दिवस को 'मानव एकता दिवस' का नाम देकर मनाया तथा अब इस सम्मेलन का प्रबन्ध किया गया है। सन्त कृपाल सिंह जी महाराज ने क्यों ऐसा किया? यह तो उनको ज्ञात होगा। वह नाम दान देते हैं, शिष्यों की सुरतें चढ़ाते हैं तथा अपने आध्यात्मिक केन्द्र में आत्म ज्ञान की शिक्षा देते हैं, उन्होंने किस अनुभव के आधार पर 'मानव केन्द्र' स्थापित किया और वह यह काम कर रहे हैं यह उन्हीं को पता होगा। पर मुझे इतना याद है कि जब सन् १९४२ ई० में मैं हुजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के दरबार में गया था तो उन्होंने कहा था कि मैंने लाखों को नाम दिया है पर केवल २-३ व्यक्तियों ने रहस्य जाना। जिनमें से एक का नाम उन्होंने सन्त कृपालसिंह बताया था, शेष दो का मुझे पता नहीं! इस विचार से मैं उनको मर्मज्ञ समझ कर उनका सम्मान व आदर करता हूँ। सम्भव है कि उसी मर्म के सहारे जो मैंने समझा है, उन्होंने भी समझा हो और यह मानव-केन्द्र स्थापित किया हो अर्थात् यह कार्य कर रहे हों। हुजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज का एक पत्र जो सन्त कृपाल सिंह जी के नाम था। वह 'दयाल पत्रिका' में प्रकाशित हुआ था उसमें उन्होंने सन्त कृपाल सिंह जी को आदेश दिया था कि सबको एक मंच पर लाने का प्रयास करो।

हुजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के दरबार में मैं इसलिये गया था, कि मैं सत्य प्रिय होने के नाते सत्यता पूर्वक कार्य करना चाहता था। सन्त मत में सच्चाई और यथार्थ भेद किसी विशेष अधिकारी शिष्य को ही बताया जाता रहा है। कबीर साहब ने धर्म दास जी को सार भेद बता कर कहा :—

धर्म दास तोहि लाख दोहाई, सार भेद नहिं बाहर जाई।

स्वामी जी महाराज ने भी इस प्रकार कहा है :—

सन्त बिना कोई भेद न जाने, वह तोहि कहें अलग में।

सत्य प्रिय होने के नाते मुझे सच्चाई वर्णन करनी थी किन्तु मुझे यह डर था कि सन्त मत के अज्ञानी लोग मेरी सचाई को सुनकर मेरा विरोध करेंगे। अतः मैं उनके दरबार में गया था कि यदि वे मुझको इस काम से मना कर दें तो मेरे सिर पर जो गुरु ऋण और कर्तव्य था, उनके न करने का जो पाप था वह मुझे न लगे, किन्तु उन्होंने मुझे यह आज्ञा दी कि फकीर ! निर्भय होकर काम करो, मैं तुम्हारा संरक्षक रहूँगा।

अतः आज लगभग ३५ वर्ष से मैं यह कार्य कर रहा हूँ। अब मैं अपनी आत्मा से यह पूछता हूँ कि तूने यह 'मनुष्य बनो" की घोषणा क्यों की ? क्या तेरे इस काम से लोग मनुष्य बन जायेंगे ? मनुष्य वह बन सकता है, जिसको सुखी शान्त, स्वस्थ्य और समृद्धिशाली बनने की आवश्यकता है। वह 'मनुष्य' तभी बनेगा जब उसको शारीरिक मानसिक और आत्मिक प्रकृति का ज्ञान होगा, यह ज्ञान उसको किसी पूर्ण अनुभवी पुरुष के सतसंग से प्राप्त होता है। आजकल संसार पशु बना हुआ है :—

गुरु पशु नर पशु, तिरिया पशु, वेदपशू संसार।
मानुष ताही जानिये, जामें विवेक विचार ॥

सतसंग में विवेक प्राप्त होता है। मनुष्य वह बन सकता है जिसको मनुष्य बनने की इच्छा है। इच्छा कब होती है ? जब मानव दुःखी, अशांत और भयभीत होता है। इस विचार से मैंने मनुष्य बनो के निम्नलिखित नियम जो मेरे अनुभव में आये वह कहे :—

(१) शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य। मेरा अनुभव यह सिद्ध करता है कि मानव की अशान्ति, भ्रम और रोगों का अधिकतर कारण उसकी शारीरिक भ्रान्ति, मानसिक ब्रह्मचर्य की गिरावट और व्यभिचार का जीवन है। अतः मैं इस पर अधिक बल देता हूँ।

(२) दूसरा कारण हमारी घरेलु फूट, एक दूसरे से घृणा, द्वेष तथा भेदभावना है। हम अपने घरों में एक दूसरे के अवगुणों और त्रुटियों की ओर ध्यान देकर घृणा द्वेष करते हैं। अपने कटु वचनों द्वारा दूसरों का हृदय

दुःखाते हैं। सन्तों के मार्ग में औरों के अवगुण देखना महान अपराध माना गया है।

(३) हमारी अशान्ति का तीसरा कारण हमारी आर्थिक अवस्था की हीनता है। अतः हुजूर दाता दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल जी महाराज की शिक्षा के अनुसार अपनी जीविका स्वयं ही कमानी चाहिये। जितनी आय हो उसी के अन्तर्गत जीवन यापन करना चाहिये। आजकल जीवन के आदर्श को ऊँचा करने का प्रबल विचार पाया जाता है, किन्तु जीवन की आवश्यकताओं को तो जितना बढ़ाओ, उतनी ही बढ़ती चली जायेंगी। अतः नियम यह है कि :—

1. Cut your coat according to cloth.
2. Simple living & high thinking.

(४) हमारे दुःखों का चौथा कारण हमारा अज्ञान है।

आज तक सन्तों और अन्य धार्मिक नेताओं ने समय की मांग के अनुसार जीवों को जो यह विचार दिया कि कोई बाह्य शक्ति, मानव के अन्तर राम, कृष्ण, मोहम्मद, जैन, बुद्ध, ईसामसीह अथवा गुरु आदि के रूप में प्रकट होकर उसकी सहायता करती है और सच्चाई को गुप्त रक्खा मैंने इस लोहे के परदे को तोड़ दिया और सत्यता की खुली घोषणा कर दी, कि जो कुछ किसी को प्राप्त होता है, वह उसके अपने ही विश्वास, अपनी ही आस और अपनी ही श्रद्धा का फल प्राप्त होता है। कोई बाह्य शक्ति किसी के अन्तर नहीं आती। चूँकि मानव को यह विचार दिया गया था कि बाह्य शक्ति ही आकर तुम्हारी सहायता करती है। अतः वह उसको अन्य बाह्य शक्ति ही समझ कर पूजता है। इसका परिणाम यह निकला कि मानव जाति भिन्न-भिन्न धर्मों, पन्थों और गद्दियों में बट गई और आपस में घृणा व द्वेष, उत्पन्न होने के कारण आपस में लड़ते और एक दूसरे का सिर काटते हैं।

हम बाहर से भी कुछ ग्रहण करते हैं। क्या? केवल संस्कार (Impressions & Suggestions)। किसी को पुस्तकों से मिले,

किसी को देखने से मिले, किसी को सुनने से मिले, किसी को प्रारब्ध कर्म के अनुसार मिले और किसी को पिछले महापुरुषों के विचार जो इस ब्रह्माण्ड में वर्तमान हैं, उनसे प्राप्त हुये। इन सबका उपचार और सत्यता की घोषणा, मैंने अपने सतसंगों और साहित्य में कर दी। जिनके भाग्य में था, अथवा है, उन्होंने उस पर आचरण किया और अपना सांसारिक जीवन हर्ष पूर्वक बिताया।

अब यहाँ विश्व मानव एकता सम्मेलन हो रहा है। सोचता हूँ कि क्या विश्व 'मानव एकता' हो सकती है ? मेरी सारी आयु इसी धुन में व्यतीत हो गई। विश्व मानव एकता तो एक ओर रही स्वयं अपने अपने मनकी एकता रखना भी महा कठिन है। सन्त हो चाहे असन्त हो, धनी हो अथवा निर्धन हो, राजा हो अथवा भिखारी हो, प्रत्येक व्यक्ति का मन कभी कुछ सोचता है तथा कभी कुछ सोचता है। मैं सोचता हूँ कि जब मानव अपने ही मन को प्रत्येक समय एकता में नहीं रख सकता तो यह कैसे सम्भव है कि समस्त जगत के जो मानव हैं उनमें एकता आ जाये। फिर विचार उठता है कि सम्भवतः मैं ही न कर सका हूँ। यह बड़े-बड़े सन्त महात्मा तथा साम्प्रदायिक नेता गण यह बताने की कृपा करें कि क्या इनके सम्प्रदायों और पन्थों ने इनके अन्तर अथवा अपने अनुयाइयों के अन्तर समता उत्पन्न की है ? मैं कहूँगा कि नहीं की। यदि की होती तो हिन्दू और मुसलमान, यहूदी और अरब आपस में क्यों लड़ते। बौद्धों को मार-मार के भारत वर्ष से क्यों बाहर निकाला गया ? यह तो सम्प्रदायों और पन्थों की दशा है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक सम्प्रदाय में अनेक शाखायें हैं। मुसलमानों में ७२ फिरके हैं। सिक्खों में अनेक दल हैं। जैनियों, बौद्धों और ईसाइयों के भी कई दल हैं। हिन्दुओं में तो अनेक शाखायें और दल हैं। प्रत्येक दल वाला औरों के विरुद्ध है तो मेरी समझ में नहीं आता कि मानव एकता कैसे हो सकती है।

फिर सोचता हूँ कि एक ही वर्ग (सम्प्रदाय) के व्यक्ति भी आपस में लड़ते हैं। पाकिस्तान के पंजाबी मुसलमानों और बंगाली मुसलमानों की

लड़ाई को आपने पढ़ा सुना और देखा है। शिया और सुन्नी मुसलमान आपस में लड़ते हैं। मजदी मुसलमानों के साथ दूसरे मुसलमानों का झगड़ा होता रहा अरे ! इसको भी छोड़ो। आजकल भाई-भाई को मार रहा है। बाप बेटे का झगड़ा है और पति व स्त्री का झगड़ा है। फिर एकता कहाँ रही ?

मैं बड़े सम्मान पूर्वक सन्त कृपालसिंह जी महाराज से और मुनि सुशील कुमार जी महाराज से एवं अन्य महापुरुषों से पूछता हूँ कि आप लोग कैसे मानव एकता ला सकते हैं ? बताइये ? हाँ ! सोसाइटी (सभा) बन गई। इसमें व्याख्यान हो गये। रुपया इकट्ठा हो गया और आदर सत्कार भी मिल गया। इन सम्मेलनों का लाभ भी है कि आपस के प्रेम और मेल मिलाप से एक दूसरे को समझने और जानने का अवसर मिल जाता है। एक दूसरे से विचार मिलते हैं। इससे कई व्यक्तियों के विचारों में परिवर्तन व सुधार होने की भी सम्भावना होती है, शर्त यह है कि वह अपना एक नेता (Leader) चुनें और उसकी आज्ञा का पालन करें।

अब मुझे कबीर साहब का शब्द याद आता है :—

पात पात के सींचते, बिरवा गया सुखाय।
माली सींचे मूल को, डार पात हरियाय ॥

एकता के न होने का जो असली कारण है, जो मूल है जब तक उसको ठीक नहीं किया जायगा, एकता का होना असम्भव है। भाषणों, सम्मेलनों अथवा सभाओं से पूर्ण सफलता नहीं होगी। हाँ ! एक विचार प्राप्त होगा और वह भी धन्य हैं। कदाचित यह महापुरुष जो यहाँ इकट्ठे हुये हैं। कोई सुगम विधि निकालें। जब तक मानव के मन की संकल्प शक्ति वश में नहीं होगी, मैं समझता हूँ कि एकता का आना अत्यन्त कठिन है।

मन को वश में करने की क्या विधि है ? हो सकता है ईश्वर की भक्ति कुछ सहायक हो और कुछ सहारा दे, परन्तु जब तक इस मन के रूप को समझने का सच्चा ज्ञान, सच्ची बुद्धि, सच्चा विवेक नहीं प्राप्त होता और

मन को वश में करने की सही विधि नहीं प्राप्त होती, मेरे विचार में मानव में समता और एकता नहीं आ सकती। यह समझ, यह विवेक, यह ज्ञान और यह विधि जब भी प्राप्त होगी, किसी सद्गुरु अथवा सत ज्ञान दाता जिसका मन स्वयं समता, एकता और वश में है, उसी से प्राप्त होगी :—

निम्नांकित शब्द को ध्यान देकर पढ़िये :—

कोई माने न गुरु की बात, धोखे धार बहा।
सौदा करने हाट में आया, गाँठ की पूँजी धूर मिलाया॥
मया मिली न रामहि पाया, दुबिधा साथ रहा॥

इसका इलाज क्या है ? किसी सतपुरुष की बात पर आचरण करना। परन्तु संसार वाले सतपुरुष की बात को आजकल मानते क्यों नहीं ? मेरा अनुभव यह कहता है कि मन की एकता और समता न होने के कारण जो परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं, उन बुरे विपरीत परिणामों का जब तक अनुभव नहीं होता, जीव मानने के लिये तैयार नहीं होता। अतः मैं उत्साह पूर्वक कह रहा हूँ कि जब तक मानव-जाति पर दुःख, क्लेश और आपत्तियां नहीं आयेंगी, यह बात को सुनने के लिये बिलकुल तैयार नहीं होंगे। अपने-अपने कर्म का फल सभी को भोगना पड़ेगा। इस समय जिधर देखो अशान्ती ही अशान्ति है। मन में अशान्ति, घरों में अशान्ति, देश में अशान्ति और ससार में अशान्ति। हो सकता है कि इसी कारण से सन्त कृपालसिंह जी महाराज, मुनि सुशील कुमार जी महाराज और अन्य महापुरुषों के मन मस्तिष्क में "विश्व मानव एकता" का विचार उत्पन्न हुआ हो। इस संसार में Demand and Supply (माँग तथा पूर्ति) का नियम काम करता है और सन्त, परम सन्त, महापुरुष फकीर और वली इस संसार में आये। उन्होंने अपने-अपने विचार के अनुसार और समय की आवश्यकता के अनुसार संसार को सच्चा मार्ग दिखाया और उपदेश दिया :—

निस दिन झूठा बाद विवादा, लम्पट मन इन्द्री के स्वादा।
मन नहिं मारा चित नहीं साधा, दारुण कष्ट सहा॥

इस मन को वश में करने के लिये गुरु क्या बताते हैं ?

(१) सतसंग ।

(२) सुमिरन, ध्यान तथा भजन ।

सतसंग से जीव को सच्चा ज्ञान और सच्ची बुद्धि प्राप्त होती है, शर्त यह है कि सतसंग किसी पूर्ण पुरुष का हो । आजकल तो प्रत्येक व्यक्ति गुरु बन कर बैठ जाता है और उपदेश करने लग जाता है, किन्तु उसका अपना मन तो धन बटोरने, मान प्रतिष्ठा और बड़ाई प्राप्त करने में तत्पर रहता है । ऐसे व्यक्ति के सतसंग से कोई विशेष लाभ नहीं होता । यह सम्मेलन यदि मानव की एकता में कुछ सहायक हो सकता है तो इसकी एक यह भी विधि है कि सतसंग वह करायें जिसका अपना मन समता और एकता में है । उसके विचारों का प्रचार किया जाय । सम्भव हो सकता है कि कुछ समय के पश्चात मानव क्लेशों व आपत्तियों को झेलते हुए शान्ति और एकता की ओर आ जांय ।

अब रहा यह प्रश्न कि सुमिरन, ध्यान और भजन किस विधि से हो ? सर्वप्रथम देशीय परिस्थितियों का विचार रक्खा जाये और फिर जीव की प्रकृति की ओर ध्यान दिया जाये जिस वातावरण में व्यक्ति उत्पन्न हुआ है उसकी ओर जरूरी ध्यान दिया जाय । प्रत्येक व्यक्ति के भाव भिन्न-भिन्न होते-हैं, उनको अपने वश में रखने के लिये और समता में रखने के लिये अलग-अलग साधन और अलग-अलग उपाय अनिवार्य हैं । यदि देश देशान्तरों के महापुरुष, साधू और फकीर सोच विचार से काम लें तो मानव एकता और मानव समता की कुछ आशा हो सकती है । सबसे बड़ी युक्ति जो मेरी समझ में आई है, वह यह है कि मानव अपने विचारों को अपने (साम्प्रदायिक) भावों को अपने धर्म या पन्थ को अपने अन्तर रक्खे । औरों से मिलते समय उनके विचारों और भावों का सम्मान करता हुआ उनसे वार्तालाप करे । यदि ऐसा नहीं होगा तो राय और विचार भिन्न होने के कारण एकता नहीं हो सकती । अतः औरों के भावों का सम्मान करना और सहनशीलता (Tolerance) बहुत आवश्यक है ।

नहिं विचार नहिं हिये विवेका, झूँठी मन में धारी टेका ।
सूझा एक न सूझा अनेका, राधास्वामी पद न गहा ॥

प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने सम्प्रदाय, अपने अपने पन्थ और अपने अपने गुरु की टेक रखता है । अन्य व्यक्ति जो उसके मत के नहीं है और दूसरे विचार रखते हैं, उनसे ईर्ष्या और द्वेष रखता है । हम लोग जिस कदर भी किसी की टेक रखते हैं यह सब धोखा है । क्यों ? बहुत से व्यक्ति मुझ पर विश्वास करते हैं और टेक रखते हैं । मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट होता है, उनकी सुरतें चढ़ाता है, औषधियाँ बताता है, पर्चे हल कराता है, मृत्यु समय आकर लेजाता है आदि आदि । किन्तु मैं नहीं होता, और न मुझे कोई जानकारी ही होती है । ऐसे व्यक्ति मेरी बड़ाई अथवा प्रशंसा करते हैं । ऐसे ही और व्यक्तियों का हाल है । वह भी अपने गुरुओं की बड़ाई करते हैं और उनकी भी सहायता होती है । किन्तु इस अज्ञान के कारण मानवजाति भिन्न भिन्न सम्प्रदायों, पन्थों, गद्दियों और डेरों में बँट गई और एक दूसरे से द्वेष करने लग गई ।

राधास्वामी पद क्या है ? अपना ही आपा ।
राधा आदि सुरत का नाम, स्वामी आदि शब्द पहिचान ।

अपने आप का ज्ञान, अपने आपको जानने की शिक्षा और निज स्वरूप अथवा निज नाम की शिक्षा सब धर्मों में है । किसी ने उसको किसी प्रकार से बयान किया किसी ने किसी विधि से वर्णन किया । मन्तव्य व अर्थ सब का एक है, केवल वर्णन-शैली ही भिन्न है ।

जो कुछ किसी को प्राप्त होता है, वह उसके अपने विश्वास, अपनी श्रद्धा और अपने दृढ़ निश्चय का ही फल मिलता है । बाहर के गुरु ने तो मानव को अच्छा विचार, विश्वास और सत्य ज्ञान देना है ! यदि इस बात का ज्ञान होजाय तो हमारी बहुतसी बिपत्तियां, क्लेश और भ्रम जो इस धोके से उत्पन्न होते हैं वह दूर हो सकते हैं । इस धोखे के कारण ही सहस्रों धर्म सम्प्रदाय, सहस्रों पन्थ और सहस्रों गद्दियां बन गईं । इस धोखे से लाभ भी है । वह यह है कि जीव चूँकि निबल और अबल है, सहारा चाहता है ।

अपने ऊपर तो वह विश्वास कर नहीं सकता और न उसमें इतनी शक्ति ही है तो इस धोखे और अज्ञान के कारण उसको आनन्द और हर्ष प्राप्त होता है और वह आशावादी होजाता है। किन्तु इस प्रकार से आशावादी होने और लाभ उठाने से संसार में एकता नहीं आ सकती।

मैंने विश्व मानव एकता पर विचार किया है कि क्या कोई ऐसा उपाय है जिससे मानव का कल्याण हो सके ? इस संसार को रखने वाली कोई बड़ी भारी शक्ति है और वह शक्ति इन नक्षत्रों और ग्रहों के प्रभाव के अन्तर्गत काम करती है। इसका प्रमाण देता हूं। मैंने जन्त्री में पढ़ा है कि ग्रहों के कारण पाकिस्तान पर ढाई वर्ष आपत्ति रहेगी। अब कोई लाख प्रयास करे इन ग्रहों से बचना कठिन है। हिन्दू जाति ने बहुत खोज(Research) की है। यह ज्योतिष विद्या गलत नहीं किन्तु अपूर्ण अवश्य है क्योंकि गत वर्ष में नव ग्रहों के प्रभाव ही लिये जाते थे, अब तीन और नये ग्रहों की खोज न होती। उनके भी प्रभाव अब सम्मिलित किये जाते हैं। अब मैं सोचता हूँ कि यह अनुकूल या प्रतिकूल जो कुछ भी हो रहा है, क्या यह Universal mind (ब्रह्माण्डीय मन) के कर्मानुसार नहीं है ? यदि ऐसा मान लिया जाय तो हमारे तमाम प्रयत्न और सुझाव व्यर्थ ज्ञात होते हैं। सन्त कबीर ने भी अपने एक शब्द में स्पष्टतयः कहा है कि यह सारा खेल कर्म गति ही का है।

कर्म गति टारे नाहिं टरी।
मुनि वशिष्ठ से पण्डित ज्ञानी, सोध के लगन धरी।
सीता-हरन मरन दशरथ का, वन में बिपति परी॥
कहां वह फन्द कहां वह पारिधि, कहां वह मिरग चरी।
सीता को हर लेगया रावण, सोने की लंक जरी॥
नीच हाथ हरिचन्द बिकाने बलि पाताल धरी।
कोटि गाय नित पुन्न करत नृप, गिरगिट जोनि परी॥
पाण्डव जिनके आप सारथी, तिन पर बिपत परी।
दुर्योधन को गर्व घटायो, यदुकुल नाश करी॥

राहू, केतू, भानु, चन्द्रमा, विधि संयोग परी ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, होनी होके रही ।।

यही बात मेरी समझ में आई है । यह तो वर्तमान संगठनों और सम्मेलनों का विचार इन महापुरुषों के विचार में सूझा है, यह भी कर्मगति ही के आधीन है । क्यों ? प्लाटो ग्रह तुला राशि में आरहा है और यूरेनस पहले ही तुला राशि में है । इन दोनों ग्रहों के प्रभावानुसार जो दसवें घर में पड़े है, सात आठ वर्ष में भारतवर्ष एक अति समृद्धिशाली और महान देश इस विश्व में हो जायगा । यह जो मानव एकता और मानव कल्याण का विचार इस समय आया है, यह भी प्रकृति के खेल ही के प्रभावाधीन आ रहा है और मुझे पूर्ण आशा है कि यह विचार फैलकर मानव जाति के लिये लाभदायक सिद्ध होगा । इसके अतिरिक्त प्रत्येक जीव के अपने प्रारब्ध कर्म भी होते हैं । मेरा अपना निजी विचार है कि जब तक श्रेष्ठ व्यक्ति शासन में नहीं आयेंगे तब तक सर्व साधारण में एकता और मानवता का आना असम्भव है । मेरा पूर्ण विश्वास है कि वह समय निकट आरहा है जब कि हमारे देश को वर्तमान प्रजातन्त्र की चुनाव पद्धति में परिवर्तन करना पड़ेगा । मानव का जीवन उसके विचारों पर निर्भर है । अपने भाव से व्यक्ति अच्छे स्वभाव वाला बन जाता है और दुर्विचार से वह निकृष्ट स्वभाव वाला बन जाता है ।

मैं सच्चे हृदय से चाहता हूँ कि मानव जाति का कल्याण हो । हम में एकता, समता, प्रेम और स्नेह का भाव उत्पन्न हो और इस जीवन की हमारी यात्रा पूर्ण हो । मैं निजी तौर से स्वयं निवृति मार्ग का अनुयायी हूँ । यह काम जो मैंने किया है अथवा करता हूँ यह केवल हुजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज की दया और उनके संस्कार से किया करता हूँ । सम्भव है कि मेरे पिछले जन्म के कर्म भी हों । अतः मैंने विवश होकर यह काम किया है । एक बात मैं और कहे देता हूँ कि जो व्यक्ति अपने आप को इस मानसिक संसार से ऊपर रख सकता है उसके संकल्प में यह शक्ति होती है कि वह इस Universal कर्म को बदल सकता है

अथवा न्यूनाधिक कर सकता है। हुजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज ने मुझे एक शब्द में लिखा है :—

जीव अनेक रहें जग माहीं, पर फकीर कोई एका।

सम्भव है कि आप महापुरुषों में कोई ऐसा व्यक्ति हो जो मन से ऊँचा रहता हो और उसका संकल्प काम कर जाय। मैंने अपने जीवन में फकीर बनने का बड़ा प्रयत्न किया है। किन्तु यदि सच पूछते हो तो अब तक भी कभी कभी गिरता रहता हूँ।

मैं सच्चे हृदय से चाहता हूँ कि इस कान्फ्रेंस (सम्मेलन) का शुभ संकल्प यदि सचमुच मानव-कल्याण के लिये है और किसी के निजी स्वार्थ के लिये नहीं है तो यह अवश्य संसार में फले और फूले।

सबको शान्ति !

मोह नींद तज उठ मन पापी, अन्त समय पछतावेगा ॥टेक॥
दोलत दुनियां माल खजाना, माया का सब ताना बाना।
इन सबका कुछ नहीं ठिकाना, कोई काम नहीं आवेगा ॥मोह०
क्या बैठा है फूला फूला, क्यों अपने अज्ञान में भूला।
क्यों संसार हिंडोले झूला, ऊपर नीचे जावेगा ॥मोह०
सत और असत नहीं पहिचाना, रैन दिवस रहा सोना खाना।
मानुष जनम सार नहीं जाना, यम के जाल बंधावेगा ॥ ,,
यह संसार सपन की माया, झूठा तन मन झूठी काया।
सच्चा जान वृथा भरमाया दौड़ दौड़ मर जावेगा ॥ ,,
मोह नींद में हो मतवारा, निज स्वरूप का ध्यान बिसारा।
राधास्वामी का घट कर दीदारा, जाग जाग फल पावेगा ॥ ,,

Statement of Income & Expenditure of General Satsang, Radhaswami Dham Trust, Radha Swami Dham, Distt. Varanasi. For 1972—73

INCOME

1. By Opening balance	2538.60
2. By Donations & Subscription	927.25
3. By Sale of R. S. Dham product	39.00
4. By Mail transfer from BE MAN temple	3135.00
5. By Interest	52.12
6. By Hospital Receipts	41.50
Total—	6733.47

EXPENDITURE

1. Building, construction, maintenance & Repairs.	2174.42
2. Electricity	309.05
3. Furnitures	105.35
4. Gardening	65.50
5. Bhandara	626.30
6. Hospital medicines & equipments	75.54
7. Library books, newspapers & periodicals	38.94

8.	Postage & Telegrams	1188.05
9	Salary of Staff (T.A.&D.A.)	1183.55
10.	Stationery	35.87
11.	Legal expences	18.00
12.	Miscellaneous	333.76
		Rs. 5054.33
	Closing Balance (+)	,, 1679.14
		Total Rs. 6733.47
	Total Income during the year	6733.47
	Expenditure	5054.33
	Balance — — — — — — —	Rs. 1679.14

Certified that the closing balance on 31/3/1973 is Rs. 1679.14 (Rupees One thousand, Six hundred, Seventynine and paise fourteen only).

Sd. Bajarang Bahadur Srivastava
(Auditor)

Sd. Atmanand Sastri
Secretary/Manager
Radha Swami General Satsang Trust,
Radha Swami Dham, Varanasi (U.P.)

मिनिस्ट्री आफ हैल्थ एण्ड फैमिली प्लानिंग

परिवार नियोजन

अधिकतर लोग नियोजित जीवन व्यतीत करना चाहते हैं किन्तु उनमें बहुत से दुखी हैं। इसका मुख्य कारण यह हैं कि वे अपने परिवार को नियोजित नहीं करते या कर सकते हैं।

यह ख्याल कि परिवार नियोजन केवल बच्चों की संख्या कम करना है, पूर्णतया ठीक नहीं है।

मुख्य पौइन्ट जो नियोजित परिवार के आधार हैं, वह यह हैं :—

(१) लड़कियों के विवाह की अधिक आयु; स्त्री शिक्षा को अधिक सुविधायें; लड़कियां भी उतनी ही अच्छी हैं जितने कि लड़के।

(२) माताओं और बच्चों के स्वास्थ्य की ओर अधिक ध्यान, उचित समय दिये बिना लगातार गर्भाधान को रोकने पर जोर, जिससे माताओं का स्वास्थ्य गिर जाता है और परिवार के स्वास्थ्य और प्रसन्नता पर प्रभाव पड़ता है।

(३) छोटे परिवार में बच्चों की शिक्षा और उन्नति के लिये अधिक अवसर।

(४) छोटे परिवार के कारण भूमि के टुकड़े टुकड़े होने से बचाव होता है। इसमे समृद्धि बढ़ती है।

(५) हम चाहते हैं कि लोग सुखी और स्वस्थ रहें। परिवार का नियोजित होना ही इसका उचित उपाय है।

(६) परिवार की सम्पन्नता के नियोजन का संदेश लेने व देने वाले दोनों को वरदान है। आपके अड़ौस पड़ौस के लोगों को इस संदेश की आवश्यकता होगी मगर वे केवल कथन नहीं चाहते। आपका उदाहरण उनको प्रेरित करेगा। अतः आपसे अपील है कि आप अपना ज्ञान और अनुभव अपने पड़ौसियों को बांटें।

जे० दत्त मलिक

परमदयाल फकीरचन्द जी कृत हिन्दी पुस्तकें

आध्यात्मिक पुस्तकें

मानव धर्म प्रकाश भाग १	)७५
मानव धर्म प्रकाश भाग २ (श्री दुर्गादास कृत)	१)
आवागमन उर्फ जीवन रहस्य	१)
सार का सार भाग १ व २	४)
गरुड़ पुराण रहस्य	१)५०
संत सतगुरु वक्त	१)५०
अगम वाणी भाग १, २, ३,	३)
सतपद	)५०
बारहमासा की व्याख्या	२)
सुरत शब्द योग	१)
निर्वाण से परे	१)
बेहद्दी या अपार के परे	१)२५
ईश्वर दर्शन	१)
मेरी धार्मिक खोज	१)२५
गुरु महिमा	१)
गुरु बन्दना	)७५
अजायब पुरुष	१)
सार तत्व सचाई और शान्ति	१)
आदि अन्त	१)२५
पांच नाम की व्याख्या	१)२५
सत ज्ञान दाता भाग १ व २	२)
नाम दान	१)
उस घर की खोज	१)
अगम विकास	१)
निर्माण	१)
अनुभव ज्ञान प्रकाश	१)
ज्ञान योग	१)

अन्य धार्मिक पुस्तकें

सत सनातन धर्म या मत मानव धर्म	३)
जगत कल्याण	)७५
विश्व धर्म भाग १ व २	१)७५
फकीर वचनामृत	)५०
कर्म भोग या मौज भाग १ व २	१)७५
राधास्वामी शताब्दी पर मेरी भेंट भाग १ व २	२)२५
जगत निस्तार	१)२५
जगत उभार	१)
मानव कल्याण भाग १, २, ३, ४, ५	५)
अद्भुत मोती	)७५
५० वर्षीय फकीर अनुभव	)५०
मेरा ८३ वर्षीय अनुभव	१)२५
मानवता युग धर्म	)५०
आकाशी रचना	)५०
आजादी की कुंजी	)५०
शिव फकीर पत्रावली	१)५०
हृदय उद्गार	१)
फकीर सार शब्द व्याख्या	१)
रचना का भेद	)७५
नव विवाहितों को उपदेश	)७५
उन्नति मार्ग	)२५
गूढ़ रहस्य व्याख्या	२)

Regd. No. ALG-28

महारामायण संक्षिप्त	७-००
गीता भाग १ व २	२-५०
नानक योग	४-००
राधास्वामी योग	६-००
कबीर योग भाग १,२,३	५-२५
कर्मयोग रहस्य	१-००
Light on Anand Yog	३-००
आनन्द योग प्रकाश	२-५०
कबीर आद्य ज्ञान प्रकाश	२-००
कबीर की साखी	२-२५
पंथ सन्देश	३-००
शब्द गुञ्जार भाग १,२,३	४-५०
विचार शक्ति अथवा मनोविज्ञान	१-५०
विचार दर्पण	१-००
फकीर भजनावली	१-००
जीवन सुधार	१-२५

शिक्षाप्रद, रोमाचकारी मोती और शाही सिलसिले के उपन्यास हैं

नई पुस्तकें

निर्वाण	१-००
सहज भक्ति	१-००
उस घर की खोज	१-००
अनुभव ज्ञान प्रकाश	१-००
हिसक मोती	२-००
ज्ञान योग	१-५०

ग्राहक सं०

श्रीमान् — 77. C. Gajraj Mysker Hindi Pandit
Rathode Building
Pochamma Gali
Jumerat Bazar
Nizamabad (A.P.)

सम्पादक व प्रकाशक—
देवीचरन मीतल
सेवराज नगर,
अलीगढ़।

Printed by S.C. Mital, Dayal Printing Press, Aligarh